अतीत की ओर...

वर्ष : 01, अंक : 06, फरवरी – मार्च 2024

विशेषांक

प्रमिला

माँ से मातृभाषा तक...

मेरे मस्तिष्क में केशव विराजो
मेरे भीतर महाभारत छिड़ी है

- प्रखर 'पुंज'

मूल्य : 20 रुपए | पृष्ठ : 4

ई – पत्रिका उपलब्ध है : www.rachnakosh.in

सरोज कु. मिश्रा (अनजाना)

बिहार के शान, तरह – तरह के खान पान

लोग कहेला की भोजन के संबंध भाव से होला... बाकी बिहारी भोजन खान पान के संबंध सिर्फ भूख से नईखे... एकरा में बिहार के संस्कार श्रद्धा, प्रेम, स्वाद के साथ - साथ स्वास्थ के अनुकुलता उम्र के सहजता... मौसम के मिजाज... आ भावना के अलग - अलग अंदाज भी छुपल बा...। पूरा गृह विज्ञान के सिद्दांत, खाद संसाधन, खाद्य परिक्षण, स्वाद के जायका आउर विविधता सब कुछ बिहारी परंपरा में समाहित बा...। जवन आज कल वैज्ञानिक तकनीक कहात ब...। बिहारी भोजन में पूरा आयुर्वेद के पथ्य - अपथ्य आ इलाज के तकनीक कहीं ना कहीं समाहित बा...।

जवन फास्ट फुड खाए वाला आधुनिक लोग... नयका खान पान के आधुनिक तकनिक बतावत बा... उ हमनी के प्रांत में सतुआ, भुजा, चिउरा, खास्ता, नमकिन, दलिया, माठा, सदियों से उप्लबध बा। एतने ना हमनी के बिहारी भोजन में कहीं ना कहीं पूरा हिन्दुस्तान के पारंपरिक भोजन अलग - अलग समाहित बाटे...। उदाहरण के तौर पर सरसों के साग आउर

मकई के रोटी... जवन बिहार के मूल भोजन ह... उ पंजाब के परंपरा में आपन बेजोर स्थान बनईले बा...। ओही तरह से बसिया भात, माठा भात, मुढ़ी लाई... जवना के शुरुआत बिहार से भईल उ बंगाली लोग के प्रिय भोजन बनल... ई विषय पर हमनी के अगिला अंक में बात होई...।

हमनी के संस्कृति में सब देवी देवता खातिर तरह तरह के पकवान, मिठाई... बिहार के लोग अपना परंपरा में शामिल कईले...। एकर भी विस्तृत जानकारी रउरा लोग के अगिला अंक में पढ़े के मिली...। एगो अनाज से विभिन तरह के भोजन कईसे बनावल जा सकत बा... एकर नमूना हमनी के बिहार में देखे के आजो मिलत बा..।

उदाहरण के तौर पर एगो चना... अलग - अलग भोजन जइसे मिठाई, नमकिन, पकवान, इत्यादि के रुप में इस्तेमाल होके सभे लोग के दिवाना बनइले बा...। आगे के अंक में अलग - अलग भोजन समग्री के स्वाद, स्वास्थ - सुविधा, परंपरा, परिक्षण के खयाल से... उपयोगिता के साथ ओकर महत्व आ तइआर करे के विधि रउरा सबके अगिला अंक में विस्तार में मिलि....।

हमार दादी के रसोई...

युवा लेखिका : रश्मि तिवारी

चली आज हम रउवा लोग के अपना दादी के पुराना कुछ याद आ अनमोल जानकारी से रूबरू करावतानी... **कहते हैं एक मां के लिए उसके बच्चे उनकी जान होते हैं , इसी अवधारणा से संबंधित हमारे बिहार में कई ऐसे व्रत है जो मां के द्वारा अपने बच्चे के लिए किए जाते हैं , और किस प्रकार के कठिन विधियों का पालन करते हुए किए जाते हैं, आपमें से कोई ही होगा जो मरुआ शब्द से अनजान होगा**, जी हां, हम उहे मरूआ के बात कर रहल बानी जेकर हर साल जिउतिया व्रत के नहाए खाए वाले दिन रोटी बनेला, आ बस एतने ना एकरा साथे - साथे झिंगुनी के सब्जी आउरू नोनी के साग के भी बड़ा मान्यता बा। कहल जाला की एकरा पीछे कौनो चिल्हो सियारिन के कहानी बा, जौना में चिल्हो जे रहली ऊ सबसे पहिले ई व्रत के कइले रहली। आ उहे सबसे पहिले ई मरुआ के रोटी आ झिंगुनी के सब्जी आ नोनी के साग खइले रहली। ओकरे बाद से ई व्रत आ ई खाना प्रचलन में आ गइल। मरुआ बहुत पौष्टिक आहार हटे, सोचनीय विषय बा की आखिर ई व्रती लोग खातिर ही काहे बनावल बा, एसे ताकि व्रती लोग के शरीर में पौष्टिक आहार मिले आ ऊ लोग के स्वास्थ ठीक रहे। रउवा लोग के इहो जानकारी देदी कि ई अइसन फसल बा की एकरा में न ज्यादा पानी, न ज्यादा खाद, ना ज्यादा दिन आउर न ज्यादा मेहनत के जरूरत पड़ेला। अइसन

मरुआ के रोटी

नईखे कि खाली गेहूं के आटा से ही अच्छा अच्छा व्यंजन बन सकता, मरुआ के आटा से भी बहुत अच्छा - अच्छा पौष्टिक व्यंजन बनावल जाला जइसे मरुआ के सत्तू पराठा, आलू पराठा, हलुआ इत्यादी। बहुत दुख के साथ ई कहे के पड़ ता कि आज के समय में ए परब में मरुआ के प्रथा धीरे - धीरे विलुप्त हो रहल बा आज के समय...आ आवे आला समय में ई आउरी खत्म हो जाई। एही से हमार 70 साल के दादी हमनी के आज भी कहेली की तू लोग ई सब पौष्टिक आहार के सेवन करत रह लोग। काहे की मरूआ खाए से शरीर मजबूत होला और स्वास्थ ठीक रहेला। साठी के चावल – छठ महापर्व से इ व्यंजन के खासा जुड़ाव बा। अइसन मानल जाला कि जहां सब फसल के उपयोग होत रहे ऊहा साठी के चावल, खान पान में गीनती ना होखे। ई सब से साठी के चावल रोवत रही... त छठी मईया कहली कि रोव मत हमार पूजा में तोहरे चावल के खीर बनावल जाई। साठी के चावल के जब गुड़ के साथ रसियाव बनेला त ओकर स्वाद के कौनो जोर नईखे...।

रश्मि तिवारी आपन दादी से बिहार के खान – पान पर बात करत बारी

चली एकरे साथ हम अपना दादी के कथन आ अनुभव के समाप्त करत बानी। आ रउवो लोग से कहत बानी कि रउवो लोग अपना दादा - दादी से जुरल रहीं... आ प्यार से सजल ज्ञान लेत रही।

अतीत की ओर...

इतिहास के पन्नों में...

1957 : यूएसएसआर ने वायुमंडलीय परमाणु परीक्षण किया।

1948 : हिमाचल प्रदेश राज्य का गठन किया गया।

नई सुबह का इंतजार है...

रितेश आदर्श

उ से सब राकेस बुलाते थे। माई (जो बहुत बीमार थी) ने उसे घर आने का आग्रह किया था। राकेस के लिए बड़ी असमंजस की स्थिति थी। राकेस ने कई संभावनाओं पर विचार करने के बाद बिहार लौटने की हिम्मत जुटा ली। सुबह तत्काल टिकट की लाइन में लगने से बेहतर विकल्प दलाल को अतिरिक्त पैसा देकर गारंटी सहित टिकट पाना है । उसे जैसे तैसे टिकट मिल गई। पच्चीस तीस घंटे का सफर उसे हर पल अपनी मां से दूर कर रहा था । राकेस प्लेटफॉर्म नंबर तीन पर सुबह आठ बजे 12336 भागलपुर सुपरफास्ट एक्सप्रेस ट्रेन का इंतजार कर रहा था। साढ़े आठ बजे जैसे ही ट्रेन आई वह लपककर अपनी सीट पर बैठ गया । सुकुन भरी एक लंबी सांस लेकर आंखे बंद करके मन ही मन ईश्वर को धन्यवाद दे रहा था। वह इस बात से खुश था की इतने खराब मौसम में उसकी ट्रेन टाइम पर आ चुकी थी, पर ट्रेलर को पिक्चर समझना उसकी बहुत बड़ी भूल साबित हुई। ट्रेन टाइम पर नहीं, पूरे साढ़े चौबीस घंटे लेट थी।

टीटी साहब हांफते हुए आए और पूछने लगे, टिकट है ?

हां, टिकट है , रुकिए दिखाते हैं।

आज का है क्या!

हां

फिर कोई मतलब नहीं है , या तो कल जाना या आज

चालान करा लो, क्योंकि तुम्हारी टिकट की ट्रेन कल आएगी।

सर, बहुत जरूरी है जाना!

वो नई बात नहीं है , जरूरी होने पर ही न लोग जाता है, आप अकेले नहीं है , पचास आदमी हमको रोज यही बात बोलता है ।

अपनी बचत का मोटा पैसा टिकट पर गंवा देने की वजह से ट्रेन से उतरना ही एकमात्र विकल्प था। उसे भूख लगने लगी थी। खाना बेचने वालों की भीड़ में अक्सर भूख ज्यादा महसूस होती है । राकेस को याद आ रहा था कि कैसे भर पेट भोजन करने के बाद भी माई उसको ट्रेन में मूंगफली खरीदने की जिद को मना नहीं कर पाती थी। प्लेटफॉर्म पर चिप्स, बिस्कुट, केक बेचने वाले तमाम विक्रेता ने प्लेटफॉर्म नंबर तीन पर डेरा डाल लिया क्योंकि इस प्लेटफॉर्म पर अगले चौबीस घंटों तक लोग सिकुड़ कर बैठे रहेंगे। राकेस ने अपनी

गोद में पड़े हुए बैग को खोला और बड़े चाव से अपनी पत्नी विमला द्वारा पैक किए गए भोजन को खाने लगा। मुबंई से भागलपुर तक के इस लंबे सफर का दारोमदार पत्नी ने इन बाहर से सख्त पर अंदर से नरम लिट्टी पर डाल दिया था । राकेस सुबह चार बजे उठी विमला के प्रेम से भर उठा था। विमला जिसे अगले दिन परिवार और बच्चों को अकेले संभालना था, चाहती थी कि राकेस का सफर अच्छे से कट जाए। विमला जब पहली बार मुंबई आई थी तो सासुमां ने बड़े जतन से सत्तू भेजा था। दस किलो के सामान में दो किलो सत्तू ले जाते वक्त विमला एक सिपाही जैसी थी। एक सिपाही जैसे अपनी मुट्ठी में मिट्टी कैद कर लेना चाहता है , उसी चाव से इस गृहिणी ने अपनी संस्कृति को अपने कंधों पर ढोने में कोई कसर नहीं छोड़ी। बिहार से आने या जाने में और बिहार से दूर रहने पर भी राकेस अगर मजबूत रहा तो उसमें विमला का बहुत बड़ा हाथ था। राकेश मां और पत्नी दोनों से बराबर प्यार करता था।

राकेस उन चंद लोगों में था जिसकी मां और पत्नी ने उसे दो हिस्सों में न बांटकर उसके सपनों को और मजबूत उड़ान दी थी। वह एक से निकलकर दूसरे तक नहीं पहुंच रहा था। उसके लिए मां और पत्नी दोनों उसकी दो आंखें थी जिसने उसे इस दुनिया की खुबसूरती का एहसास कराया था। आज मां को उसकी जरूरत थी, आईसीयू में मां अपने बेटे के आने तक रुक सकने की पूरी कोशिश कर रही थी। वह उसे आखिरी विदाई देना चाहती थी। इधर राकेस मां के ख्यालों में डूबा हुआ था। रोटी कमाने के लिए इतनी दूर आना आज उसे बहुत खटक रहा था। वह खुद को कोस रहा था। अपने आम, लीची महुआ के बागान की नरम मिट्टी से दूर एक शहर में लोहा काटते हुए वह मां से दूर हो गया था।

सूबह सवेरे उठ कर महुआ के फल चुनना, उसको धोना, सुखाना और गरमा गरम महुआ की रोटी उसमें विषाद पैदा कर रही थी। इसके अलावा चना सरसों और अलसी (तीसी) के खेतों की देख रेख में बीता बचपन इस बात की गवाही था कि रोटी कमाने की जद्दोजहद खासी कामयाबी नहीं दिला पाई थी। पीसे हुए तीसी और पके हुए चावल एक साथ खाने का स्वाद आज बेहद उन्नत नस्ल के अनाजों में नहीं था। आखिर बिहार सिर्फ लिट्टी चोखा तो नहीं ही था। उसके खेत खलिहान उर्वर थे, पर शहर की चमक दमक से बचने का कोई

उपाय नहीं है । विमला ने एक नए शहर में उसे संभाल लिया था। दोनों ने इस शहर को अपना लिया था, पर मन में कचोट रह गई थी । अपनों से दूर होना एक बड़ा बलिदान था । राकेस अचानक फोन की घंटी से घबरा गया। फिर उसे एहसास हुआ कि वह अभी भी प्लेटफॉर्म नंबर तीन पर ही है । शुन्य हो चुके राकेस को दुबारा विक्रेताओं के बेसुरे तान और बच्चों की चिख सुनाई पड़ने लगी। छोटे भाई ने ट्रेन की स्थिति जानने के लिए फोन किया था। बातचीत से पता चला कि मां की स्थिति जस की तस बनी हुई है । नाक में डॉक्टर साहब ने फूड पाइप लगा दी थी, जिससे खाना सीधे पेट तक पहुंच रहा था । एक लम्बे इंतजार के बाद ट्रेन आई और राकेस की मायूस चेहरे पर उम्मीद की किरण दिखाई पड़ने लगी । मां को सोचते हुए यह सफर कई बॉर्डर पार करते हुए गंगा यमुना के संगम प्रयागराज आ पहुंचा था । फिर गंगा के साथ - साथ राकेस ने कमजोर हो रही पेशियों के दम पर बाकी का सफर तय किया । दोनों अपने अंदर स्थिरता महसूस कर रहे थे । ऐसा लग रहा था दोनों भागलपुर पहुंचने के लिए अब बेताब नहीं थे। ट्रेन यूपी में आने के साथ सुपरफास्ट से पैसेंजर हो गई और गंगा ने मैदानों में अपनी चंचलता खो दी। आखिरकार दोनों अंत में भागलपुर पहुंचने में कामयाब रहे । राकेस की मां से मिलने की ख्वाइश और मां की गंगा से मिलने की ख्वाइश दोनों एक साथ पूरी हुई। राकेस अंदर ही अंदर खुद को कोस रहा था। पर अब बहुत देर हो चुकी थी। भागलपरु जंक्शन पर ट्रेन रुक गई थी, जीवन रूक गया था, एक बचपन और एक युग का अंत हो गया था।

अतीत की ओर...

इतिहास के पन्नों में...

1858 : रानी लक्ष्मीबाई को अंग्रेजों से भीषण युद्ध के बाद झांसी को छोड़ना पड़ा।

1968 : नासा ने अपोलो 6 का प्रक्षेपण किया।

अन्न के रानी - चावल

प्रेम शंकर

चावल एक ऐसी अनाज है जिसकी उत्पत्ति पर आज भी संशय बरकरार है। कुछ लोग कहते हैं की चावल की खोज सबसे पहले चाइना में हुई थी। वहीं कुछ ऐसा भी माना जाता है की चावल सबसे पहले भारत मे देखा गया था। खैर सच जो भी हो आज हम बात करेंगे, बिहार में पाए जाने वाले चावल में समय के साथ हुए बदलाव की एवं चावल से बनने वाले स्वादिष्ट व्यंजनों की। मेरे दादा जी विनायक सिंह बताते है कि आज से हाल के कुछ दशक पहले तक बिहार में सिर्फ पांच या छ: किस्म के हि धान उगाए जाते थे। जिसमें मुख्य होता था लाल धान, साठी और बासमती। दादा जी बताते थे की "ऊ चड़ी के धान होत रहे जवन की कबो फेल ना होत रहे, बाकी लोग ओकरा के मोटका धान-मोटका धान बोल - बोल के आ पता ना कहां से इ बिदेशी आ हाइब्रिड धान आइल जवन सड़ाव करत बा और साल दर साल किसानन के दुख देत बा"।

खैर जो भी हो आज बिहार में कम से कम 20 से 30 किस्मों के धान उगाए जाते हैं और चावल से बनाए जाने वाले पकवान भी उससे कम नहीं रह गए है, कुछ तो है जो हम रोज हि खाते हैं, जैसे - भात, खिर, खिचड़ी इत्यादी।

वहीं कुछ ऐसे भी हैं जो पहले बिहार के पारंपरिक भोजनों में शामिल थे लेकिन अब सिर्फ पर्व त्योहारों पे बनने वाले स्वादिष्ट पकवान बनके रह गए हैं। जिनमें मुख्य है चावल के आटे से बनने वाले कसार, मालपुआ, ढकनेसर, तिलउरी, दूधपिठी खाजा, तिलकुट, पेड़ा, धुसका इत्यादी।

एक कहानी ऐसी है की सुदामा अपने मित्र कृष्ण से मिलने द्वारिका चार मुट्ठी चावल ले कर गए थे। महाभारत काल में द्रोणाचार्य के पुत्र अश्वत्थामा को गाय के दूध के अभाव में चावल का लेप मुंह पर उनकी मां लगा देती थी ताकी लोग समझे की उनके बेटे ने दूध पी लिया है। यहां तक की सिंधु घाटी सभ्यता में भी चावल की खेती के प्रमाण मिले हैं।

भोजपुरी विशेष

भोजपुरी ग़ज़ल

संग हमरा साजिश ई कइसन भइल बा
बानी बीच दरिया किनार दूर भइल बा

प्रीत के आखर नीर बन बरखल बाकिर
फूल कागज में अबहि ले कुल धइल बा

खाब के बोझा देखऽ के माथवा पर लोग
बस जीये के दुआ दे गइल बा

खूबसूरत जे रूप के लोग बावे
खुद हवाले ऐनक कऽ खुद से भइल बा

छोड़ अइनी आँगन भले हम शहर में
आहऽ ओकर कब ए हिया से गइल बा

- सोनु किशोर

भोजपुरी गीत : रूप के गगरी

का कही तोहरा पर दिल आ गइल
रूप के गगरी छलकते नशा छा गइल

जइसे जन्नत के हुर होखे सजल
हुश्न के महफ़िल में गूंजे दिलकश गजल
हम भइनी फिदा तोहरी मुस्कान पे
कइलु घायल नैना के तू बान से
तीर करेजा आके जइसे समा गइल
रूप के गगरी...

तोहरी पीछा ना कबहु हम छोरब सनम
तोहसे पिरितिया के नाता हम जोरब सनम
कुछ दिन ला अभी अनजाना बानी
बाकिर जनम भर के दीवाना बानी
तोहरी हर अदा हमका भा गईल
रूप के गगरी...

- अनजाना

भोजपुरी ग़ज़ल

कब ले छूपईबू रानी रखबू जोगाई हो।
दिलवा में हमरा तू गईलू समाई हो।

आईके जिनिगिया देहलू किस्मत बनाई हो।
धन्य भइनी तोहसे सनेहिया लगाई हो।

दिल करे तोहके दुलहिनिया बनईती।
अपना हाथे रोजे हम सेनुरवा सजईती।

करबू तू रानी जब सोलहो श्रृंगार हो।
अखियां के अपना हम दर्पण बनीइति।

जिंदगी भर ले बनल रही साथ तोहार हो।
तोहरा खातिर भूखती हम सोलहों सोमार हो।

तोहरे से बनी हमार घर संसार हो ।।
दिलवा लुटाई देहनीं जानो देहब वार हो ।।

- अवनिश त्रिपाठी

साहित्य मासिक

विशेषांक

घनश्याम

श्याम से सावन तक...

वर्ष : 01, अंक : 06, फरवरी – मार्च 2024

भोर होने को तो कब की हो चुकी मन की मगर
कुछ अंधेरा रह गया है रौशनी के बाद भी।

- प्रखर 'पुंज'

मूल्य : 20 रुपए

ई – पत्रिका उपलब्ध है : www.rachnakosh.in

भोजपुरी ग़ज़ल

परल खेत परती सुखारी में सगरो
बोआइल ऊ डूबल दहारी में सगरो।

जोताइल ना कहियो बोआइल ना कहियो
धराइल बा बान्हे बेमारी में सगरो॥

भइल पानी - पानी जवानी बुझाता
कटी रोते - रोते लचारी में सगरो॥

अबहीं लें बीतल ना सावन आ भादो
पड़ल घून बाटे बखारी में सगरो॥

सहेजे - बटोरे के आदत जो नइखे
लुटा अइनी सउदा बजारी में सगरो॥

बचावल ना, सबदिन जे खेलल आ खाइल
मिली फल ओकरा बुढ़ारी में सगरो॥

तू पहिचान बेच ना गउवाँ के "गुंजन"
लुकाइल बा बचपन घरारी में सगरो॥

- डॉ. ज्ञानेश्वर 'गुंजन'

एक क़दम की दूरी

तुम फूल हो...
उस बड़े से मकान के आँगन की
जिसे मुझ जैसे को देखने तक की मनाही है
हाँ तुमसे इश्क़ है, लगाव है,
चाहत हैं, मोहब्बत है, प्यार हैं
या कुछ और है, जो तुम समझों

मैं तुम्हें देखने की चाहत में
इस गली में आया करता हूँ
उस बड़े से मकान की चार - दिवारी में
लगे उस बड़े से किवाड़ के झांझर से,
देख कर खिल उठता है दिल मेरा...
हाँ डर लगता है उस कुते से
जो लगा है तुम्हारी पहरेदारी में..
जाने क्या बैर है उसको मुझसे
देखते ही भौंकने लगता है... भाऊ भाऊ
जैसे उसके मालिक के आँगन की खुश्बू को
चूरा लूंगा 'मैं'.....!!!

एक दिन था खोए हुए तटस्थ पर
कुछ मिले-जुले सवाल मेरे मन पर
गुजरते हुए तुम्हारी गली से यही
सोच रहा था..

मिलोगी जब तुम,जिस दिन मुझ से
क्या होंगी? कैसे होंगी?
बातों की शुरुवात हमारी
कही तुम भी फेर तो न लोगी मुंह अपना,
मेरा पहनवा- ओढाव, फटी-पैर की एड़ियों को देख...
पुराने कपड़ों में कोमल दिल है मेरा
बिल्कूल तुम्हारे खिलते हुए पंखुड़ियों के जैसे....!!

हाँ- हाँ याद आया मुझे मिलोगी जब
तो कहुंगा मुझे प्रेम है तुम से...
और तुम्हें भी मुझ से...
हाँ शायद तुम मुकर जाओगी
लेकिन दिखता है तुम्हारे चेहरे पर,
तुम मानो या ना मानो तुम्हें प्रेम है मुझ से
तभी तो मैं खींचा हुआ चला आता हूँ...
इस बड़े से मोहल्ले के बड़े बड़े मकानों से
घिरी हुई इस गली में ..इस बड़े से मकान के

बिच एक कोने से झाकती हुई मेरे इंतज़ार में तुम्हारी
आँखों को देखने....!!

अच्छा छोड़ो!, फ़िर ये बताओं चलोगी
तुम मेरे उस छोटे से आँगन में,
तब तो मेरे आँगन का दृश्य ही बदल जायेगा
चांद तारे झाकेंगे बादल से, चुपके चुपके....!
हाँ ये मनोहर ख्वाब है बस जो कभी पूरा होने से
रहा...!!

हाँ लेकिन तुम ऐसे ही चहकते रहना
मैं रोज़ आया करूंगा तुम्हें देखने
क्योंकि मुझे प्रेम है तुमसे, मुझे लगाव है तुमसे,
मुझे प्यार हैं तुमसे, मुझे इश्क़ है तुमसे....!!

- अनीश कुमार देव

तुम या वो

कितनी जच रही थी आज तुम
फूलों के बीच महक रही थी आज तुम
वो लट जो तुम्हारे, खेल रहे थे पत्तों से
एक धागे से जैसे सिली हुई थी आज तुम

दिख रही थी काली घनघोर घटा मध्य चंदा सी,
क्यू इतना सज रही थी आज तुम ?
दो नैन तुम्हारे ढूंढ रहे थे, फागुन बीच बदरी को
क्यू इतना बहक रही थी आज तुम?

माना मैने बोला था की, सजती संवरती हो तो अच्छी लगती हो
पर सच बतलाना क्या मेरे लिए ही साड़ी पहनी थी आज तुम !
कितनी जच रही थी आज तुम
फूलों के बीच महक रही थी आज तुम॥

- प्रेम शंकर

प्रधान संपादक : अभिनंदन द्विवेदी | सहायक संपादक : अभिनंदन पाण्डेय, अलबेला, चित्रांश श्रीवास्तव, कुलदीप तिवारी | संपादक मंडल : विक्की, कुश श्रीवास्तव, अंकित शर्मा | संपादकीय कार्यालय : पिठौरी, बनियापुर, सारण – 841301, बिहार | अपनी रचना हमें भेजे : rachnakosh.editor@gmail.com